समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 23 September 2026

रानी लक्ष्मीबाई जयंती : “खूब लड़ी मर्दानी वो तो...” कविता की पंक्तियाँ जो नसों मे भर देती है वीरता और साहस

Publisher

Published on 19 Nov 2025

19 नवंबर भारतीय इतिहास में सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि साहस, नेतृत्व और अटूट स्वाभिमान के जन्म का दिन भी है। आज ही के दिन वर्ष 1828 में वाराणसी में एक ऐसी बालिका ने जन्म लिया था, जिसने आगे चलकर अंग्रेजों की नींद उड़ाने वाली योद्धा रानी लक्ष्मीबाई का रूप लिया। रानी लक्ष्मीबाई की जयंती पर पूरा देश उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है। उनके जीवन को याद करते हुए हर भारतीय के मन में वह अमर कविता जरूर गूंजती है—

“खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी...”

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई यह कविता केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि वह ज्वाला है जिसने पीढ़ियों को देशभक्ति, वीरता और संघर्ष के लिए प्रेरित किया है। रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की हर झलक, हर युद्ध और हर त्याग की कहानी इस कविता में सजीव हो उठती है।

रानी लक्ष्मीबाई—वीरता की जीवंत प्रतिमा

रानी लक्ष्मीबाई का असली नाम **मणिकर्णिका तांबे** था। लोग उन्हें स्नेह से ‘मनु’ कहकर बुलाते थे। बचपन से ही उनमें अद्भुत साहस, घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्धनीति का ज्ञान था। 1853 में पति महाराजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद जब अंग्रेजों ने झांसी हड़पने की कोशिश की, तो लक्ष्मीबाई ने देश और मर्यादा की रक्षा के लिए स्वयं युद्धभूमि में उतरने का फैसला किया।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में वह वीरांगना की तरह लड़ीं। उन्होंने अपने दत्तक पुत्र दामोदरराव को पीठ पर बांधकर युद्ध किया, दुश्मनों को मात दी और उस समय की सबसे बड़ी शक्ति—ब्रिटिश सेना—का डटकर सामना किया।

“खूब लड़ी मर्दानी”—क्यों आज भी दिलों मे गूंजती है यह कविता ?

सुभद्रा कुमारी चौहान की यह अदम्य कविता भारतीय साहित्य की सबसे प्रभावशाली कृतियों में से एक है। कविता की हर पंक्ति रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का साक्ष्य बन जाती है। इसमें न सिर्फ उनके युद्ध कौशल का जिक्र है, बल्कि उस आत्मसम्मान की भी बात है, जिसके लिए उन्होंने अपना प्राण तक न्योछावर कर दिया।

कविता की कुछ पंक्तियाँ आज भी युवाओं में जोश भर देती हैं। यह कविता बताती है कि लक्ष्मीबाई केवल रानी नहीं थीं, बल्कि आज़ादी की पहली महिला योद्धाओं में से एक थीं। उनके साहस ने ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था और हिंदुस्तान के हर घर में हिम्मत की लौ जलाई थी।

इतिहास की पन्नों से लेकर आज के समय तक—अमर है रानी लक्ष्मीबाई का संदेश

रानी लक्ष्मीबाई की कहानी केवल एक युद्ध कथा नहीं, बल्कि एक संदेश है—
अन्याय के सामने झुकना नहीं, अधिकारों की रक्षा के लिए खड़े होना है।

आज के समय में, जब चुनौतियाँ कई रूपों में सामने आती हैं, रानी लक्ष्मीबाई की यह कविता और गाथा हमें याद दिलाती है कि साहस किसी परिस्थिति का मोहताज नहीं होता। संघर्ष जितना बड़ा हो, विजय उतनी ही महान हो जाती है।

यही कारण है कि उनकी जयंती पर स्कूलों, विश्वविद्यालयों और देशभर के मंचों पर यह कविता गूंजती सुनाई देती है। यह हर भारतीय, खासकर युवा पीढ़ी को यह भरोसा देती है कि यदि इरादे मजबूत हों, तो कोई भी चुनौती असंभव नहीं।

रानी लक्ष्मीबाई की जयंती केवल एक ऐतिहासिक तिथि का उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की उस परंपरा का अभिनंदन है, जिसने वीरता और स्वाभिमान को सर्वोच्च दर्जा दिया। “खूब लड़ी मर्दानी वो तो...” जैसी अमर कविता उनके जीवन का सार है, जो आज भी हमें प्रेरित करती है कि कठिन परिस्थितियों से डरे नहीं, बल्कि उनका डटकर सामना करें।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.